Mahatma Gandhi Shati Smarak Mahavidyalaya,

Garua Maksoodpur, Ghazipur

EST-1972

Workshop on Gender Concerns in Hindi Literature

13 अक्टूबर 2022 को महात्मा गाँधी शती स्मारक महविद्यालय गरुआ मकसूदपुर में हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया| इस कार्यशाला का प्रारम्भ प्राचार्य सुशील तिवारी के उद्बोदन से किया गया| मुख्य वक्ता के तौर श्री रामाश्रे थे जिन्होंने स्त्री विमर्श पर अपने विचार रखते हुए बताया की नारीवादी सिद्धांतों का उद्देश्य लैंगिक असमानता की प्रकृति एवं कारणों को समझना तथा इसके फलस्वरूप पैदा होने वाले लैंगिक भेदभाव की राजनीति और शक्ति संतुलन के सिद्धांतो पर इसके असर की व्याख्या करना है। स्त्री विमर्श संबंधी राजनैतिक प्रचारों का जोर प्रजनन संबंधी अधिकार, घरेलू हिंसा, मातृत्व अवकाश, समान वेतन संबंधी अधिकार, यौन उत्पीड़न, भेदभाव एवं यौन हिंसा पर रहता है।

स्त्रीवादी विमर्श संबंधी आदर्श का मूल कथ्य यही रहता है कि कानूनी अधिकारों का आधार लिंग न बने। आधुनिक स्त्रीवादी विमर्श की मुख्य आलोचना हमेशा से यही रही है कि इसके सिद्धांत एवं दर्शन मुख्य रूप से पश्चिमी मूल्यों एवं दर्शन पर आधारित रहे हैं।

हालाकि जमीनी स्तर पर स्त्रीवादी विमर्श हर देश एवं भौगोलिक सीमाओं में अपने स्तर पर सक्रिय रहती हैं और हर क्षेत्र के स्त्रीवादी विमर्श की अपनी खास समस्याएँ होती हैं।

नारीवाद राजनीतिक आंदोलन का एक सामाजिक सिद्धांत है जो स्त्रियों के अनुभवों से जनित है। हालांकि मूल रूप से यह सामाजिक संबंधों से अनुप्रेरित है लेकिन कई स्त्रीवादी विद्वान का मुख्य जोर लैंगिक असमानता और औरतों की अधिकार इत्यादि पर ज्यादा बल देते हैं।

नारी-विमर्श (फेमिनिज्म/फेमिनिस्टडिस्कोर्स) का प्रारंभ कब हुआ, इसके संबंध में विद्वानों में सुनिश्चित एकमतता नहीं है। कुछ लोगों के अनुसार इसका प्रारंभ उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ, जब पश्चिम में स्त्रियों के मताधिकार और पाश्चात्य संस्कृति में स्त्रियों के योगदान पर चर्चा होने लगी थी।

इस एक-दिवसीय कार्याशाला का समापन हिंदी विभाग की सहायक आचार्य प्रिया शुक्ला के धन्यवाद प्रस्ताव के द्वारा किया गया।

प्राचार्य
महात्मा गांधी शती स्मारक महाविद्यालय
गरूआ, मकसूदपुर-गाजीपुर